# स्त्री-पुरुष

---


लेखक :-

श्री गुलाबरत्न वाजपेयी "गुलाब"



चौथा संस्करण ]

मूल्य ३॥ ]

# चौथा संस्करण

वर्तमान-भारत की जनता "स्त्री-पुरुष" पढ़नेके लिये विशेष रूपसे उत्सुक थी। मँहगाई का ज़माना, अधिक माँग देखकर पुनः छपाना पड़ा। आशा है, प्रत्येक स्त्री-पुरुष इसे अपनाकर ज़िन्दगी में वैज्ञानिक चमत्कार उत्पन्न करेंगे।

कलकत्ता
४-१-४६

रामनरेश वाजपेयी

## चौथा संस्करण

स्वाधीन-भारत की जनता "स्त्री-पुरुष" पढ़ने के लिये विशेष रूप से उत्सुक थी। मंहगाई का ज़माना, अधिक माँग देखकर पुनः छपाना पड़ा। आशा है, प्रत्येक स्त्री-पुरुष इसे अपनाकर ज़िन्दगी में वैज्ञानिक चमत्कार उत्पन्न करेंगे।

कलकत्ता
४-१-४६

रामनरेश वाजपेयी

# काम-विज्ञान

विषय :—

मन्मथनाथ

## नवयुवकों के लिये
## काम विज्ञान की शिक्षा जरूरी है

मनुष्य आज भी जंगली जानवर है। उसने झोपड़ी छोड़ कर ऊँचे महल बनाये हैं, दरख्तों की छाल छोड़ कर वस्त्र पहने हैं। विज्ञान, साहित्य, कला और व्यापार में भी उसने उन्नति की है। लेकिन उसका दिमाग सिर्फ दस सैकड़े जागा है। नब्बे फी सदी मस्तिष्क से वह काम नहीं लेता। आदर्श और सभ्यता की ओर तो मनुष्य एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सका। दुनिया में जैसी पहले लड़ाइयाँ लड़ी जाती थीं, आज भी वैसा ही जनसंहार हो रहा है। मनुष्य ने युद्ध नामक नशे की सृष्टि की है, दूसरी जातियों से घृणा करने के लिये।

आज मनुष्य के बर्बर रूप से दुनिया में हजारों आदमी मुसीबत की जिन्दगी बिता रहे हैं। इसी लिये कहता हूं, मनुष्य आज भी जंगली जानवर है, अभी उसका दिमाग नब्बे परसेण्ट सो रहा है।

गृहस्थ-घरों में प्रवेश कर देखिये, आज शायद ही कोई परिवार सुखी हो। स्कूल, कालेजों में जासूसी कीजिये, लड़के, लड़कियाँ

चरित्र-नाशक बातें सीख रही हैं। नौजवानों में चक्कर काटिये, शायद ही कोई ऐसा मिले, जिसे हस्तक्रिया की आदत न हो। शराबखोरी तेजी से बढ़ रही है। रण्डियों के अड्डे मुहल्ले-मुहल्ले खुलते जा रहे हैं। अधिकांश दिमागों में व्यभिचार का नशा गनगना रहा है। लोग शक्ति-नाशक बीमारियों में फँस कर चरित्रहीन बातें सीख रहे हैं। क्या हमारे, आपके, और मनुष्य मात्र के सामने ये पेचीदा समस्यायें पेश नहीं हैं?

पृथ्वी का वज़न कितने लाख टन है? जमीनसे, चाँद, सूरज, कितनी दूर हैं? ईसामसीह के बाद किसका मजहब फैला? विद्यार्थियों के दिमाग को इन सड़ी-गली हड्डियों से कुचला जा रहा है। किन्तु हम दुनिया में कैसे आगे बढ़ें? उन्नति की फ़िलासफी क्या है? विवाह करें या नहीं? विवाह के बाद किन रास्तों से चलना चाहिये। विद्यार्थियों के पोथों में इन बातों का कोई जवाब न मिलेगा। आज हम कीड़े-मकोड़े की सांइसें समझने में जमीन-आसमान एक कर रहे हैं। लेकिन अपने जीवन की दैनिक साइंसों से दिलचस्पी नहीं लेते। क्या यह मनुष्य की पशुता और मूर्खता नहीं है?

आज किसे न्याय कहते हैं, किसे अन्याय, यह मैं न समझ [illegible] और अधर्म की क्या शक्लें हैं, मैं न पहचान सका। [illegible] हर आदमी दो तरह के चेहरे रखते हैं। एक [illegible]। जो अच्छाई की ढोल पीटते हैं, उनकी जड़ें

में मुगदर्यों के घुन पाये जाते हैं। जो पवित्रता की डींगें मारते हैं, उनकी अन्दरूनी हालतें काली मिलती हैं। यदि आज कोई विधवा अवैध संतान को मार डालती है, तो उसे कड़ी सजा दी जाती है। किन्तु यदि कोई हजारों खरीददारों को घी के बदले साँप की चर्बी बेचता है और धीरे-धीरे मनुष्य की हत्या करता है तो उसे दस बीस रुपये जुर्माने हो जाते हैं। इसीलिये कहता हूं, मनुष्य आज भी जंगली जानवर है! न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म आज के मनुष्यों के खेलने के शब्द हैं, समझने के नहीं।

लेकिन इन तकलीफों के लिये भाग्य या भगवान को कोसने से कुछ न होगा। हमें मुरदा मनुष्यों को जिन्दा करने की जरूरत है। उनके दिमाग में जागरण की साइंसें भरनी होंगी। और इन्हीं पुराने आदमियों की कायापलट कर नये मनुष्य रचने होंगे। यह मनुष्य—महा मनुष्य होंगे। जब तक इस तरह के महामनुष्यों के आविष्कार न कर डाले जायंगे, समाज का कोई उपकार न होगा।

आज हमें मनुष्य के रस्मोरिवाज और रहन-सहन वैज्ञानिक दृष्टि से देखने होंगे। सबसे पहले अपनी संतानों को काम-पिपासा, गुप्त व्यभिचार, संहारक बीमारियों, अश्लील पुस्तकों और नंगी तस्वीरों के आकर्षण से बचाना होगा। डांट-फटकार कर नहीं, आदर-पूर्वक उनके सामने उन्नति की साइंसें पेश कर? जब वे इन विषयों को समझ जायेंगे, दुनिया से पतन की नशी-

बाजी उठ जायगी। काम-लालसा का ईंधन जुटाने के लिये प्रेमी-प्रेमिकाओं को प्राणों का बलिदान न देना पड़ेगा। हजारों, लाखों औरतें सरे बाजार अपना सतीत्व बेचने के लिये बाध्य न होंगी।

आज मानव-समाज का विराट अंश काम-ज्वाला में जल रहा है! लोग इस मीठे आकर्षण को दिलों में छिपा कर तरह-तरह के अपराधों में लिप्त हैं। बाजारों में पुलिस को चकमा देकर नंगी तस्वीरें खूब बिकती हैं। लोग भावुकता की नजरों से उन्हें देख कर गंदी कल्पनायें करते हैं और काम-शक्ति जगाते हैं। स्तंभन, वर्थकण्ट्रोल तथा ताकत की दवाइयों पर अंधाधुन्ध लूट है! दाम्पत्य अशान्ति से लेकर विवाह-विच्छेद, व्यभिचार, बलात्कार, नारी-हरण, भ्रूण हत्या, आत्महत्या इत्यादि सैकड़ों तरह की घटनायें हमारा सर्वनाश कर रही हैं। समाज जहरीले फोड़ों से भर रहा है। यदि मनुष्य अपनी तरक्की के लिये इनके खिलाफ क्रान्तिकारी नारे न लगायेगा और बुराइयों को ढूँढ़-ढूँढ़ कर मटियामेट न कर देगा तो भविष्य में ही मनुष्य का सर्वनाश होगा।

आज की काम-वासना मनुष्य की आयु पर भयंकरता के साथ हमला कर रही है। हम लड़ाई की खबरें सुन कर सनसना रहे हैं। जर्मनी, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस के हमलों से चौंक रहे हैं! लेकिन हमारे शरीर और मन पर कामवासनायें कैसी जहरीली गैसें मार रही हैं, इसका किसी को भी ध्यान नहीं। क्या यह नादानी नहीं है?

## नवयुवकोंके लिये काम-विज्ञानकी शिक्षा जरूरी है

संसार में मनुष्य-उन्नति को जितनी साइंसें हैं, उनमें काम-विज्ञान को विशेष प्रधानता दी जाती है। काम-विज्ञान कोई फैशन की चीज नहीं, जीवन का विराट रहस्य है! जो हमारे दैनिक कर्मों में नयी हलचलों की सृष्टि करता है। इसका उद्देश्य जीवन के आनन्दों को बढ़ा कर कष्ट काटने की तरकीबें बताना है। स्त्री कौन से ऐसे काम करे जिससे पति उस पर अपना प्यार न्योछावर करता रहे? पुरुष का क्या कर्त्तव्य हो, जिससे स्त्री उसे अपना आराध्यदेव मानती रहे? ऐसे ही अनेक महत्वपूर्ण विषय काम विज्ञान के हैं। कवियों ने इस विज्ञान को लेकर असंख्य रचनायें की हैं। उपन्यासों में इसकी तेज जगमगाहट पाई जाती है। नाटककार बगैर इसके आगे नहीं बढ़ सकते। यह स्त्री-पुरुष की फिलासफी है। जिसके बिना हर जीवन की कहानी का प्लाट कुछ वैसा ही है, जैसा बेपंख का हवाई जहाज।

आज जिनकी घरेलू जिन्दगी मुसीबतों से भरी है। वह न तो दूसरों पर आनन्द की रोशनी डाल सकते हैं, न खुद अपने में आकर्षण उत्पन्न कर सकते हैं? मैं विवाह कर विपत्तियों के दलदल में फँस गया, यह रोना घर-घर सुनाई देता है। लोग लम्बी तादादमें बच्चे पैदा कर उनकी परवरिशके लिये हैरान हैं। तरक्कीके कोई रास्ते नहीं सूझते। पर इन आफतोंकी जड़ें क्या हैं? इसकी कोई खोज खबर नहीं! हम विवाह जैसे

"यह अपनी गलतियों से दुर्दशा का शिकार है। पैसा क्या
यदि मैं रुपया भी दूं तो न लेगा।"

दोस्त को बड़ा आश्चर्य हुआ। मेरी बात पर अविश्वास
कर बोले—"कहीं ऐसा भी होता है। आज दुनिया में एक भी
ऐसा आदमी नहीं, जो रुपये देने पर न लेगा। कुछ देकर
देखिये तो?"

मैं राजी हो हो गया। दोनोंने मिलकर तीन रुपये कुछ दूर
उस रास्ते में बिखेर दिये—जिधर भिखारी जाने वाला था। हम
तमाशा देखने लगे। पहले भिखारी कराहता हुआ चल रहा
था! एकाएक उसके दिमाग में सनक सवार हुई, कि अन्धे बन-
कर चलने में क्या मजा है; उसने फौरन दोनों आखें बन्द
कर लीं और अन्धे की तरह भीख मांगता हुआ वह रास्ता पार
कर गया जहाँ रुपये बिछे थे। आगे जाकर फिर उसने आंखें
खोल लीं और पहले जैसा राहगीरोंसे भीख मांगने लगा! मेरे
दोस्त दङ्ग रह गये और उन्होंने मेरी बात सही मानी।

यह तो हुई सिर्फ एक अन्धे की घटना। लेकिन आज दुनिया
प्रति सैकड़े निन्यानबे आदमी ऐसे हैं, जो आँखें बन्द कर
चलते हैं और अपनी ही गलतियों से दुर्दशायें भोगते हैं। सच
पूछा जाय, तो दुनिया में हर आदमी के आसपास वे चीजें मौजूद
हैं, जो वह चाहता है। लेकिन मनुष्य को सब से बड़ी
कमजोरी है, कि वह आंखें खोलकर मेहनत नहीं करता और

आनन्दमय आविष्कारों में फेल होकर भाग्य तथा भगवान को कोसता है। यह मनुष्य का जङ्गलीपन है। जिसे दूर कर उसे महा मनुष्य बनाने की जरूरत है।

लेकिन यह महामनुष्य कैसे गढ़े जा सकते हैं? हजारों लाखों की संख्या में इन्हें उत्पन्न करने की तरकीबें क्या हैं? इसका एक ही उपाय है, समाज में हिंसक दिमाग के जितने आदमी हैं, उन्हें समाज के बाहर कर देना। इस तरहके मनुष्य जब तक गीदड़ बच्चे पैदा करते रहेंगे, समाज में ऐसे घृणित आदमी भरते जायेंगे, जो स्वयं शासन कार्य में तो मूर्ख होंगे ही, सुयोग्य आदमियों के शासन को मानने के लिये भी तैयार न होंगे। अब हमारा युग नये आदमियोंके इतिहास से शुरू होना चाहिये। इस नये इतिहास का आधार होगा स्वाधीन भारत के मनुष्य का जीवित नया खून। जिसमें रोग के बीज, और निर्बुद्धिता की जड़तायें न होंगी। यह खून होगा निर्मल, सतेज बुद्धि द्वारा उज्ज्वल और मनुष्य की महिमा से महान।

जिस दिन हमारे बीच इस तरह के महामनुष्य पैदा होने लगेंगे—साहित्य, शिल्प और ललित कला के सम्बन्ध में उनकी धारणायें बदल जायंगी, उनके जीवन यशस्वी, सच्चे तथा ईमानदार होंगे। वे अपने कर्त्तव्यों को समझेंगे। स्त्री पुरुष दोनों को तलाक का हक होगा, लेकिन तलाक देने की जरूरत न समझी जायगी।

नवयुवकों के लिये काम-विज्ञान की शिक्षा जरूरी है

आज मनुष्य को मौत नहीं ; जिन्दगी चाहिये। ज्ञान उप-जाऊ दिमाग शक्तिशाली शरीर और तेजस्वी मन। आज से हजार गुना ऊपर उठने के लिये ज्ञान-विज्ञान समुद्र का मंथन करो, उसकी गहराई में पैठो, कीमती मोती मिलेंगे।

बस, आगे बढ़ो और काम विज्ञान की इस अनोखी पुस्तक का एक-एक शब्द गले के नीचे उतार दो। तुम्हारी बातें असेम्बली के मेम्बर, कौंसिल के सदस्य, जज, बैरिस्टर सुनेंगे और तुम मनुष्य जीवन को सार्थक बना सकोगे।

.कृति के नियमानुसार हर जीव के जीवन में यह वासन्ती युग आता है लेकिन मनुष्य के लिये जवानी सफलता की सुन्दर सीढ़ी है। जो स्त्री-पुरुष जितने दिनों तक जवानी कायम रख सकते हैं, उतने दिनों तक आनन्द भोग करते हैं। किसी में जवानी जल्द आती है, किसी में देर से। जिस मुल्क की हवा में पानी का हिस्सा ज्यादा और उत्ताप अधिक है, उस मुल्क के स्त्री-पुरुष में जवानी के दर्शन ज्यादा होते हैं। जिस मुल्क की हवा में पानी का हिस्सा कम और रूखापन है, वहाँ के लोगों को जवानी देर से मिलती है।

जवानी के आते ही स्त्री-पुरुष के अंग-प्रत्यंग पुष्ट होने लगते हैं। मन शक्तियाँ तेज हो उठती हैं। न मालूम कैसा-कैसा मधुर उतावलापन इन्सान की शक्तियों को जगा देता है और उसमें इन्द्रिय-संचालन की प्रबल इच्छा जाग उठती है। इस लिये जवानी की उम्र में हर स्त्री-पुरुष को सावधानी से अपने को संभालने की जरूरत है। जवानी के कोई भी मिनट या सेकेण्ड खतरे से खाली नहीं। इस क्रान्तिकारी उम्र में जो लोग पथभ्रष्ट हो जाते हैं, उन्हें थोड़े ही दिनों में बुढ़ापा धर दबाता है। जिसका परिणाम भयङ्कर होता है। इस समय लोग इस तरह उतावले हो उठते हैं कि वे चलते-फिरते आदमियों की नजरें बचा कर तरह-तरह के कुकर्मों में लिप्त हो जाते हैं। उनमें शारीरिक दुर्बलताओं के चिह्न दिखाई देने लगते हैं। मन की विकाश-शक्तियाँ मुरझा

आज कल ज्यादातर लड़के लड़कियाँ छोटी उम्र से ही कुकर्मों की शिक्षा पाने लगते हैं। कहीं बदमाश नौकर नौकरानियों से भी कुशिक्षायें ले कर लोग मौजें मारते हैं। आज स्कूल, कालेजों में आपको ऐसे हजारों छात्र मिलेंगे, जो कुकृत्यों के महापाप में न डूबे हों। सिर्फ छात्र ही क्यों? छात्रियाँ भी इन आदतों में फँसी हैं। यही वजह है, जो आज के अधिकांश विद्यार्थियों के चेहरे भद्दे, उदास और सूखे दिखाई देते हैं। उनमें कोई रौनक नहीं। आँखें गढ़े में धँसी हुईं, स्मरण शक्ति लुप्त और काम इन्द्रियाँ निर्जीव। वे जीते जरूर हैं, लेकिन उनकी मानसिक शक्ति मुर्दा होती है और ज़वानी में कोई रंग या चमत्कार नहीं दिखाई देता।

कुकर्मों से बालिकाओं का मासिक धर्म समय पर नहीं होता। गर्भधारण के डिम्बकोष नष्ट हो जाते हैं। शरीर निस्तेज हो कर सूखने लगता है। स्तन देर से उठते हैं। हिस्टीरिया जैसी खतरनाक बीमारियाँ उनके जीवन में अड्डा बना कर बैठ जाती हैं। कहीं भी उनका जी नहीं लगता और वह अपने मृतप्राय जीवन को किसी तरह से धकेलती चलती हैं। स्त्रियोंका इससे बढ़कर शोचनीय खातमा और क्या हो सकता है।

बच्चे हस्तक्रिया जैसे महापाप में क्यों डूब जाते हैं? इस प्रश्न में वैज्ञानिक रहस्य है। जो लम्पट और कामी पुरुष गर्भकी में सात से लेकर दसवें महीने तक स्त्री सहवास करते

स्था है, जो एक दिन वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में बदल जाती है।

पृथ्वी की समस्त जातियों में विवाह प्रथा प्रचलित है। मनुष्य एक छोटी सी झोपड़ी बना कर उस में शान्ति से रहना चाहता है। इस में स्त्री पूरा सहयोग देती है। स्त्री पुरुष को झोपड़ी बनाने का सुनहरा चान्स दिया है विवाह ने। विवाह कोई इकरारनामा नहीं, कर्म जीवन की पूर्ति है। इसके बिना मनुष्य जीवन अधूरा है। विवाह को ही केन्द्र कर संसार के समस्त कर्म सम्पूर्णता की ओर आगे बढ़ते आये हैं। दुनिया में अनेकों ऐसे महापुरुष हो गये हैं। जिनके गौरव के परदे में बैठी हैं उनकी जीवन संगिनियां। उदाहरण स्वरूप ऋषि टालस्टाय, स्वामी रामकृष्ण, आईनस्टाइन, अमेरिका के प्रेसिडेंट रूजवेल्ट और महात्मा गांधी की पत्नी हैं।

खिलौने के खेल खत्म हो जाने के बाद जब किशोरावस्था में जवानी का सम्मिलन होता है, उस समय युवक युवतियों के मन में एक ऐसे सुख भविष्य की कल्पना उदय होती है, जिसका स्वयं वे ही अनुभव कर सकते हैं। युवक-युवती के मीठे स्वप्न देखते हैं। नव युवती कुमारी जब अपनी किसी सहेली के पति को देखती है तो रात के सन्नाटे में अपने पति मिलन की कल्पनाओं में मस्त हो जाती है। वे कैसे होंगे? उनका मिजाज कैसा होगा? सरल होंगे या कठोर?—यह सब न जानते हुए भी उसकी आंख प्रिय दर्शन की प्यासी हो उठती हैं!

जो हो, चाहे छिपे तौर से या खुले तरीके से। दुनिया का हर आदमी अपने लिए एक जोड़ीदार चाहता है। संसार में कोई दूसरी चीज नहीं, जिसके लिये मनुष्य की आत्मा इतनी ललचाये, जितना एक दूसरी आत्मा के साथ एक हो जाने की भावना को लेकर। मनुष्य की यह मिलन-भावना हमेशा अपने को पूर्ण करने की कोशिश करती है। यदि युवक युवतियों की मन शक्तियों में किसी तरह का विकार या रोग न हो, तो यह इच्छा सब में बलवती हो उठती है।

मनुष्य में खास बात तो यह है कि उसके जीवन में मिलन सुख एक विचित्र सनसनी पैदा करता है। हरी-भरी पहाड़ियों से झरने वाले झरने, चाँदनी रात की मुस्कराती बहार और बगीचे में रंग विरंगे फूलों का आनन्द-नृत्य सब कुछ देखा है, स्त्री-पुरुष ने, लेकिन जब स्त्री-पुरुष के साथ मिलती और पुरुष-स्त्री के साथ, तब उसे दुनिया के सारे सुख तुच्छ दिखाई देते हैं। उस समय उनके मन जैसे आनन्द सागर में खेलने लगते हैं, वैसे अन्यत्र नहीं। आज लाखों करोड़ों स्त्री-पुरुषों के मौन अन्तस्तल को भेद कर मिलन की जो आनन्द ध्वनियाँ संसार के कोने कोने में गूंज रही हैं, उनकी बराबरी स्वर्गीय संगीत भी नहीं कर सकता। इस विराट विश्व में जो नित्य नये उत्सव होते हैं—स्त्री-पुरुष दोनों ही उसके अभिनेता हैं। यदि हम अपने व्यक्तित्व को भूल कर किसी को अकेला ही संसार-सागर में छोड़ दें तो उसकी जीवन-

नइया जरूर टूट जायगी और उमंग के मारे आनन्द काफूर की तरह उड़ जायेंगे।

स्त्री-पुरुष के आपसी मिलन का ही नाम है—विवाह! जिसमें दो दिल एक हो कर सांसारिक सुखों की बुनियाद डालें। विवाह हो जाने के बाद अनेकों स्त्री पुरुषों की फिक्रों और आर्थिक कठिनाइयों के सवाल हल होते देखे गये हैं। एडवर्ड कारपेण्टर ने कहा है—"संसार में एक ऐसा व्यक्ति चाहिये, जिसके सामने मन खोल कर रखा जा सके। जिसके साथ किसी तरह का भेद भाव न हो। जिसके शरीर के हर एक अंग अपने ही अङ्गों की तरह प्यारे हों! जिसके साथ सम्पत्ति और अधिकार में मेरे तेरे का कोई भेद भाव न हो। क्या यह हर आत्मा की प्यारी लालसा नहीं है?" लेकिन आज कल विवाह कर दर-हकीकत में सुखी होते हैं कितने आदमी? मैं कहूंगा—सौ में दस भी नहीं!

इसका क्या कारण है? --आज क्यों ज्यादातर मनुष्य विवाह कर दुख-दैन्य के दलदल में धँसते जा रहे हैं?—"विवाह कर मैंने बड़ी भूल की। पछतावे की यह पुकारें आज क्यों घर-घर सुनाई देती हैं?"—इसकी एक ही वजह है, आज के जीवन-संग्राम में आमदनी है थोड़ी, और खर्च है ज्यादा। जो आदमी चार बच्चों को पाल-पोस सकता है; कुछ दिनों बाद वही दस सन्तानों का पिता बन बैठता है इसका नतीजा निकलता है खराब। उसे

चारो तरफ के अभाव घेर लेते हैं। उस पर मुसीबतों की मार पड़ती है और वह कठिनाइयों के चंगुल में जकड़ कर पिंजड़े में बन्द पक्षी की तरह फड़फड़ाता है। उसकी तेजस्वी शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और उसका दुर्बल शरीर पिशाच जैसा उसकी आँखों के सामने घूमता है! इस टाइप के आदमी दुनिया में कोई अनोखे काम नहीं कर सकते। वे सिर्फ खाते हैं, कमाते हैं, सोते हैं, और एक दिन जानवरों की तरह मर कर आग में जला दिये जाते हैं। क्या यह मनुष्य की महान व्यर्थता नहीं है ?

विवाह का उद्देश्य सिर्फ आदमियों की संख्या ही बढ़ाना नहीं, आनन्दमय जीवन व्यतीत कर जातीय गौरव को ऊँचा चढ़ाना है। यदि स्त्री-पुरुष को किसी बात का अभाव न हो, तो वे हमेशा खुश मिजाज रहें, और सुन्दर स्वास्थ्य के साथ वे शक्तिशाली बच्चों के माँ-बाप बन सकते हैं। उनका संसार रोग शोक से सूना होकर शान्तिकुञ्ज में परिवर्तित हो सकता है। यदि विवाह के बाद जीवन में जहरीले फल फलने लगें,—शारीरिक कष्ट, आर्थिक कठिनाइयाँ और अशान्ति की हलचलें उनमें उत्पात मचाती रहें तो विवाह कैसे मङ्गलमय कहा जा सकता है ?

विवाह क्या है, इसकी क्यों जरूरत पड़ती है—पहले इसे सोचो। विवाह किसके साथ और किस उम्र में करना चाहिये, इस विज्ञान को भी समझो। कामशास्त्र का अध्ययन कर डालो —विवाह तुम्हारे लिये ईश्वर का आशीर्वाद और सफलता का

विराट खज़ाना साबित होगा। विवाह एक कसौटी है, इसमें सफल हुआ मनुष्य वन्दनीय है। राज राजेश्वर से लेकर रास्ते के भिखारी तक ब्याह के लिये बेचैन रहते हैं, इसलिये विवाहित जीवन को सुखी और सुन्दर बनाओ। तुम जितना ही ज्यादा सहृदय, रसिक और आदर्श प्रिय होगे—उतनी ही अच्छी तुम्हें बहू मिलेगी। दुनिया में ऐसे आदमियों की तादाद कम है, जो सच्ची जीवन संगिनी न पाकर इतना शोचनीय जीवन व्यतीत करते हैं, जैसे उनकी आत्मा के अंग ही किसी ने काट डाले हों।

लेकिन, अच्छी जीवन संगिनी मिले कैसे? आज के हर युवक सुन्दरी पढ़ी-लिखी लड़की खोज करते हैं। वे चाहते हैं, उनका जीवन ज्यादा सुखमय हो। किन्तु होता है क्या? दूध पानी की तरह मिलने के बजाय वे अक्सर कहते पाये जाते हैं—"भयो क्यों अन चाहत को सङ्ग!"

यह क्यों?—इसका कारण? मैं कहूंगा मूर्खता। आज के माँ बाप कैसे बेवकूफ हैं, जो बिना लड़के लड़की की राय जाने, जिन्हें जिन्दगी भर एक दूसरे के साथ जीवन निर्वाह करना है, विवाह के बन्धन में डाल देते हैं बहुत से लड़के लड़कियों की शादी इतनी छोटी उम्र में कर दी जाती है कि वे समझ भी नहीं पाते, विवाह क्या चीज है? अक्सर लड़के लड़कियों की शादी इतनी कच्ची उम्र में कर दी जाती है कि उन्हें खबर भी नहीं रहती उनकी शादी कब, क्यों और किसलिये हुई!

बेजोड़ विवाहों का तो कुछ कहना ही नहीं। बूढ़ों की शादी छोटी लड़कियों के साथ कर दी जाती है। खूबसूरत लड़के भद्दी लड़कियों के गले मढ़े जाते हैं और बदसूरत लड़कियाँ सुन्दर लड़कों के गले का हार बन बैठती हैं। अंधे, लङ्गड़े लूले और कोढ़ी भी नहीं बचने पाते। यही है पशु-प्रवृत्ति और यहीं आदमी की बुद्धि जानवर का दिमाग बन जाती है। आज ऐसी ही सर्वनाशी प्रथाओं से हजारों लाखों दाम्पत्य-जीवन हाहाकारों के खण्डहर बन रहे हैं। युवक युवतियों की रुचि का ख्याल कर शादी करने से उनमें जीवन आ जायगा और वे सांसारिक बातों में दिलचस्पी लेने लगेंगे। उनमें उत्साह, साहस और स्वावलंबन के भाव पैदा होंगे! वे उन्नति की ओर कदम बढ़ायेंगे,—उस समय दहेज, फिजूलखर्ची और अन्य कष्टकर प्रथायें आप से आप नष्ट हो जायँगी।

आज अविवाहित लड़के लड़कियों को इस बात पर अड़ जाना चाहिये—हम बिना एक दूसरे को देखे, बगैर एक दूसरे को समझे शादी न करेंगे। इससे अनेकों सचाइयों का पता लगेगा और जिन्दगियाँ सुखी दिखाई देंगी। हम सड़ी से सड़ी चीजें खरीदते हैं, तो पहले उसे देख भाल लेते हैं। कपड़े खरीदते हैं तो आँखें फाड़ फाड़ कर परखते हैं। जूते पहनते हैं, तो उलट पलट कर परीक्षा कर लेते हैं। धेले की हण्डी खरीदते हैं, तो अच्छी तरह ठोंक बजा लेते हैं, फिर बिना देखे भाले हम जिन्दगी के लिये किसी को अपना साथी क्यों चुनें।

विवाहित जीवन को सुखी बनाने में जितनी जिम्मेदारी माता-पिता की है, उतनी ही युवक युवतियों की। उन्हें चाहिये अपने दिल की बातें कभी न छिपायें। अपनी रुचि, अपनी अभिलाषा मां-बाप से साफ साफ बतला दें। यदि उन्हें अपने लिये साथी ढूंढ़ने की जरूरत पड़े तो उन्हें विवाह की बारीकियों को समझ कर आगे कदम बढ़ाना चाहिये। बाहरी लालचों में आकर्षित होना संकट है। इस सम्बन्ध में जितना ही सावधानी से काम किया जायगा, उतना ही जीवन मधुर और विवाह का आदर्श पूरा होगा।

लम्बे पुरुष के लिये ठिंगनी स्त्री सुशोभित नहीं होती। चरित्र-हीन युवक सरला बालिका के साथ विवाह कर दाम्पत्य जीवन को कभी सुखी नहीं बना सकता। इस तरह के निकृष्ट विवाहों के फल स्वरूप आज सैकड़ों स्त्री-पुरुष नरक यातनायें भोग रहे हैं। ऐसे ही विवाहों ने उनके सारे सुख नष्ट कर डाले है और उनकी जिन्दगियाँ हाहाकारोंसे विश्व-मेदिनी को विदीर्ण कर रही हैं।

आज इस उन्नत युग में पति पत्नी के चुनाव की समस्या हर देश के लिये विचारणीय हो रही है। कुछ दिनों पहले मशहूर पत्र "फिजिकल कलचर" में "पति कैसा हो ?"—इस विषय पर लोगों के विचार मांगे गये थे। अनेकों लेख आये। जिनमें तीन सर्वश्रेष्ठ थे। उनका सारांश यहां दिया जा रहा है इनसे आपको पता लगेगा, विदेशियों के पति पत्नी निर्वाचन सम्बन्धी कैसे विचार हैं।

( १ )

## पहली स्त्री का पत्र

मुझे वह पुरुष चाहिये, जो शरीर और मन से सुदृढ़ होने के साथ ही साथ आत्म संयमी हो। यदि खूबसूरत न भी हो तो कोई बात नहीं, चेहरे पर मर्दानगी की छाप होनी चाहिये। शरीर से मजबूत हो और बच्चों में पिता जैसा लगे। उत्तम पति की परीक्षा नीरोगपन है। स्वच्छ मन, सहृदय भावुक हो तो सोने में सुगन्ध। आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सके, उसमें उतना पैसा कमाने का माद्दा होना चाहिये। ईमानदारी से छोटे से छोटा काम करने के लिये उसमें शर्म न होनी चाहिये। यदि वह श्रीमान न हो तो फिक्र नहीं, लेकिन उसमें काम करने का उत्साह जरूर चाहिये। वह प्रेम, शान्ति और सन्तोष का खजाना भी हो। विद्या और बुद्धि में बढ़ा चढ़ा चाहिये। उसका शील स्वभाव सुन्दर हो तो अति उत्तम, क्योंकि मुझे कोई अधिकार नहीं कि कोई नालायक मर्द मेरे बच्चों का बाप बने।

मैं यथाशक्ति पति की इच्छायें पूरी करूंगी। मेरे सर्वस्व का स्वामी मेरा पति हो। मैं नहीं चाहती, मेरा पति सर्वगुण सम्पन्न हो। क्योंकि मैं ही कहां सर्वगुण सम्पन्न हूं ?"

—मिस रूथकेन

( २ )

## दूसरी स्त्री का पत्र

"पति सुन्दर ही होना चाहिये, यह कोई बात नहीं। उसके चेहरे पर मर्दानगी का तेज होना जरूरी है। शरीर का जिस आत्मा से सम्बन्ध है, उसी तरह विवाह से स्त्री का अखण्ड सम्मेलन हो जाता है। विवाहित दम्पति का ध्येय, हित-अहित और सिद्धान्त एक होना चाहिये। विवाह एक पवित्र संस्कार है, यह मान कर पति को हमेशा प्रसन्न रखना जरूरी है। उसे बच्चों का ध्यान रखना चाहिये। पति का गठन विशाल, ज्ञान अपार, हृदय काव्यमय और स्वभाव सहनशील हो तो बहुत ठीक। वह विनोदी हो। फिजूल खर्ची ठीक नहीं। गृहस्थी का खर्च मजे में चला सके, धन कमाने की इतनी ताकत भी पति में होनी चाहिये।"

—एलिजाबेथ ग्लीम

( ३ )

## पुरुष का पत्र

"उत्तम पति के लक्षणों में नीरोगी होना खास बात है। क्योंकि नीरोग पति ही गृहस्थी के सुख दुख का आधार होता है। सुन्दर या असुन्दर हो तो कोई बात नहीं, चेहरे पर मर्दानगी की

बूढ़ों की काम ज्वाला में जलने से बच जायंगी। और वे समाज को धिक्कार के शब्द न सुना सकेंगी।

कुमारी लड़कियों को नीचे लिखे पुरुषोंसे ब्याह न करना चाहिये :—

जो साधू संन्यासी होने की इच्छा रखते हैं। जिन्हें जीवन-युद्ध से घृणा है। धनोपार्जन का माद्दा नहीं। जो अङ्ग-भङ्ग, अन्धे, गूँगे, पागल या कोढ़ी हैं। यक्ष्मा, बहुमूत्र, दमा, सांस, प्रमेह या गर्मी, सुजाक जैसी भयङ्कर बीमारियों के शिकार हैं। जिनको स्त्री वर्तमान है या जो बेटे बेटियों से भरे पुरे हैं। शराबी, लाल आंखों वाले, कर्कशकण्ठ, खुशामदी, झूठे और ज्यादा रोम वाले, जो नीची वृत्तियों से जीविका उपार्जन करते हैं। ऐसे पुरुषों से शादी कर किसी लड़की का जीवन कभी सुखी नहीं हो सकता। इनकी सन्तानें खतरनाक, कमजोर, भयानक और अल्पजीवी होती हैं।

उच्चकोटि के दार्शनिक, कवि, राष्ट्र-सेवी, महात्मा या साधकों के साथ विवाह करना या न करना स्त्री की खुशी पर निर्भर है। क्योंकि ऐसे लोग अपनी साधना में इस कदर तल्लीन रहते हैं कि घरेलू काम-काजों की तरफ उनका ध्यान कम जाता है और वे स्त्री को एक तरह से भूल जाते हैं।

.. किस स्त्री से ब्याह करे, किससे नहीं। यह विज्ञान भी ... । क्योंकि गृहस्थ जीवन का सारा सुख दुख

प्रेम की मतवाली लहरें-याने सफलता की साइन्स

आप जानते हैं, अपनी प्रियतमा के वियोग में कितने ही नवजवानों ने प्राण दे दिये हैं। लेकिन एक ऐसा अमेरिकन प्रेमी है, जो अपनी स्वप्न-प्रिया की तलाश में देश विदेशों की खाक छानता फिरता है। इस जवान का नाम है—डेल केण्डल। उम्र छब्बीस साल। न्यूयार्क के धनी परिवार में उसकी पैदाइश हुई है। करोड़ों की सम्पत्ति इसके पास है! फिर भी उसे चैन नहीं। क्यों?—इसलिये कि बगैर अर्द्धांङ्गिनी के उसके आनन्दों को कौन सजायगा? अमेरिका की लड़कियों को यह अधिक चञ्चल समझता है और उनसे विवाह करने को तैयार नहीं होता।

कई वर्ष हुए यह इसी उद्देश्य पूर्ति के लिये इटली पहुंचा और रेल तथा मोटरों से सारे देश में घूमता रहा। उसने हजारों मील देहातों के चक्कर काटे। प्रेमियों के आदर्श नगर पेरिस में भी वह नहीं मिली। इङ्गलैण्ड और बेलजियम में भी उसे प्रिया की मीठी मुसकान के दर्शन नहीं हुये। जर्मनी की फुदकती युवतियाँ भी उसका चित नहीं चुरा सकीं। अब हुजूर आयर्लैण्ड पहुंचे हैं और वहां दरदर की खाक छान रहे हैं।

सनकी प्रेमी प्रेमिकाओं के ऐसे हजारों किस्से हैं, जिन्हें इस पुस्तक में लिखना असम्भव है। यदि आप प्रेमी हैं और प्रेम का कुछ भी रहस्य-विज्ञान समझते हैं तो प्रेम की विचित्र घटनायें आप अक्सर देखते-सुनते और अखबारों में पढ़ते होंगे। दरअसल प्रेमी मात्र सनकी होते हैं।

आखें चार होते ही युवक-युवती के मन में प्रेम पैदा हो ज
की बातें तो अक्सर सुनी जाती हैं। लेकिन बेचारे अन्धों
आँखें कहाँ, कि उनके जीवन में इस तरह की लहरें उठें। कि
एक समाचार से ज्ञात होता है, आँख न रहते हुए भी दो युव
युवती में किस तरह अकस्मात प्रेम हो गया! कैम्बर वेल नाम
एक स्थान के प्रेमी प्रेमिका दोनों अन्धे थे। फ्रैंक नामक ए
अन्धा युवक अन्धों के होस्टल में आया जाया करता था। वह
एक युवती का सङ्गीत सुन कर वह मुग्ध हो गया। एक दि
फ्रैंक ने नम्रता के साथ होस्टल की संचालिका से, उस मधुर स्व
वाली से मिला देने का अनुरोध किया, जिसके प्रति वह खिंच
था। कुछ दिनों बाद दोनों की शादी हो गयी। अस्तु—

विदेशों में प्रेम शिक्षा पाने के लिये कितने ही नियम कानून
बनते जा रहे हैं। अभी ब्रिस्टल की एक कानफरेंस में भाषण
करते हुए डा० एडवर्ड ग्रिफिथ ने कहा है—"प्रत्येक स्त्री-पुरुष को
प्रेम करने की कला सीखनी चाहिये। बड़े आश्चर्य की बात है
शादी करने के पहले लोग प्रेम-कला सीखनी जरूरी नहीं सम-
झते। इसका नतीजा यह होता है कि वे दाम्पत्य-जीवन को
सुखी नहीं बना सकते। उनमें जहां प्रेम का पहला नशा उतरा
कि कलह शुरू हो जाती है और स्त्री-पुरुष एक दूसरे से छुटकारा
पाने के लिये तड़फड़ाने लगते हैं। आज संसार में ज्यादा गृहस्थ
जीवन क्यों नष्ट हो रहे हैं?—इसका मुख्य कारण यही है कि न

जो पति जानता है कि किस तरह पत्नी को सुखी रखना चाहिये, न पत्नी जानती है, पति को प्रेम पाश में बांध लेने की क्या तरकीबें हैं। इस लिये विवाहित जीवन को सुखी बनाने के लिये प्रत्येक युवक युवती को प्रेम-विज्ञान सीखने की जरूरत है।"

प्रेम की पहचानने की कोई नाप तौल नहीं। यह ऐसी चीज है, जिसकी नाप तौल बगैर तराजू के ही होती है। स्त्री और पुरुष कहने को दो होते हैं, लेकिन वह हैं एक ही। उनके सुख या दुख या अच्छे बुरे जीवन में जो घटनायें घटती हैं, वह पति-पत्नी के लिये अलग नहीं होती।

यूरोप के वर्तमान साहित्य में बर्नार्ड शा की निर्भीक लेखनी ने युगान्तर पैदा कर दिया है। 'शा' के एक खास दोस्त ने एक बार उनसे पूछा—"जनाब, आप कभी औरतके प्रेममें पड़े हैं या नहीं?"

उत्तर में बर्नार्ड शा ने अपने दोस्त को एक लम्बी चिट्ठी लिखी। जिसका सारांश यह है:—

"प्रिय मित्र,

मेरे जीवन में प्रेम की कोई ऐसी घटना नहीं घटी, जिसका उल्लेख किया जा सके। हां, कुछ महिलाओं ने मुझे अपना कौतुक पात्र बनाने की चेष्टा की थी। मैं भी उन रङ्गीन युवतियों के प्रति श्रद्धा निवेदन करता रहा। किन्तु जिन्दगी में प्रेम करने का सुअवसर मैंने बहुत कम पाया है। इसका सबब यह है कि सङ्गीत, थियेटर और पुस्तकें लिखने के गोरखधन्धे में मैं इस कदर

फंसा रहा कि उस तरफ मेरा ध्यान ही नहीं गया। जिस समय मैं उनतीस साल का था—एक अधेड़ विधवा ने मुझे आकर्षित करने की चेष्टा की। किन्तु वह फेल हो गयी। कारण—वह रूपवती थी सही, लेकिन उसके जीवन में प्रेम का असली तत्त्व न था। सच तो यों है, काम-शास्त्र से अनभिज्ञ कुन्वारी के प्रेम में पड़ने की अपेक्षा काम शास्त्र की पण्डिता और अधेड़ स्त्री का प्रेम सहवास ज्यादा कीमती है। ऐसी स्त्रियों से काम-तृप्ति के अलावा और भी अनेक बातें सीखी जा सकती हैं! किसी भी युवक-युवती के प्रेम में जहां विषय भोग ही जीवन की मुख्य साधना हो उठती है, वहाँ स्थायी मिलन की आशा नहीं रह जाती। इसके अलावा सब से बड़ा सत्य तो यह है, काम पिपासा बनावटी प्रेम के लाइसंसों से अमर नहीं की जा सकती।"

बनार्ड शा के इस सिद्धान्त में सचाई अधिक है। लेकिन बात यह है, आज नकली आकर्षण लम्बी तादाद में बढ़ते जा रहे हैं। "प्रेम" की इस तरह काया पलट हो गयी है कि लोग सत्य-प्रेम की उपासना छोड़ कर बनावटी प्रेम की पूजा करने लगे हैं। हर स्त्री-पुरुष के मन चञ्चल हो रहे हैं, एकाग्र शक्ति नष्ट हो रही है। वे विवाह करते हैं, लेकिन दूसरी प्रेमिका की तलाश में उनकी आंखें भटकती रहती हैं। वे आफिसों में काम करते हैं, लेकिन मन व्यभिचार की गलियों में चक्कर काटा करते हैं

आज के अधिकांश मनुष्यों की यही छिपी आफत सब से बड़ी ट्रेजेडी है, जो उसे पशुता की ओर खींचे लिये जा रही है !

स्त्री-पुरुष के प्रेम में काम का आकर्षण प्रबल है। सम्पूर्ण रूप से हृदय देवता को पाना,—सिर्फ उसका मन ही नहीं, उसके शरीर को भी अपना बना लेना इस प्रेम की एकान्त कामना है। किन्तु आत्मिक-मिलन के अलावा यदि प्रेम का शरीर-सम्भोग ही एक मात्र उद्देश्य हो उठता है तो वह सफल और पूर्ण प्रेम नहीं कहा जकता। इस शरीर चर्चा और वेश्या सम्भोग में कोई भी भेद नहीं पाया जाता। संसार में ऐसे आदमियों की तादाद ज्यादा है, जो कहते हैं—चाहे जिस किस्म की स्त्री हो, वह फौरन उसे अपनी प्रेमिका बना सकते हैं। इस ख्याल के जानवर-बुद्धि मनुष्यों में प्रेम का कोई महत्व नहीं। वह सिर्फ पशु भावना से भरे होते हैं। मनुष्य के दिमाग में जहां सिर्फ सम्भोग का ही नशा गनगनाया करता है, वहां पवित्र प्रेम की कल्पना बेवकूफी है। विषय वासना प्रेम नहीं, मोह है। प्रेम पवित्र है, मोह कामनाओं से कलंकित। प्रेम हृदय का अखण्ड रस प्रवाह है, जिसकी तेज धाराको संसारका कोई कानून, समाजका कोई बन्धन जञ्जीरों में नहीं जकड़ सकता। प्रेम स्वयं उन्नत है। वह अपने उपासकों को उस सफल मञ्जिल में खींच ले जाता है, जहां हम इतना अधिक आनन्द पाते हैं, कि दुश्मन को भी प्यार करने लग जाते हैं और दुनिया की कोई वस्तु हमें तुच्छ नहीं दिखाई देती।

लेकिन यह प्रेम आज है कहाँ? बनावटी प्रेम और
के धोखों से हमारे सारे संसार भर गये हैं। जिस प्र
एक दिन स्त्री-पुरुषों ने देखा था - देवता के रूप में, आ
धूल भरी सड़क पर भिखारी जैसा पड़ा है। इसी लिये
सुखी है, न दूसरे। जब भगवान दरिद्र हो गया, तब भ
ठोकरें खाना स्वाभाविक है।

लेकिन इन बातों से प्रेम के लिये अपने हृदय का दरवा
बन्द कर दो। प्रेम सफलता की सुनहरी साइन्स है। इसे
किस तरह अपने जीवन-मन्दिर में स्थापित कर सक्वे
किस तरह तुम में युगान्तरकारी शक्तियां उत्पन्न हो सकत
और तुम कैसे पशुत्व का जामा छोड़ कर दुनिया में अपने
एक सफल, सुखी, शक्तिशाली तथा नया मनुष्य साबित
दिखाना चाहते हो?—मैं तुम्हारे सामने एक सुन्दर फिलास
रा करता हूं। उसका उद्देश्य यही है,—दैवी, पवित्र अ
थायी प्रेम को किस तरह अपनी ओर आकर्षित किया जाय
स फिलासफी का ज्ञान स्त्री-पुरुष दोनों के लिये समान रूप
नकारी है। जितना जल्द हो सके यह ज्ञान हासिल करो—तु
सका प्रेम पाना चाहते हो, उसे अवश्य पाओगे। जिसे जीतन
हते हो, जीतोगे। जितना ऊंचे चढ़ना चाहते हो, ऊँचे उठोगे-
दुनिया से सर घुमा कर न बैठो। आँखें खोलो और देखो
ने प्रिय संसार का अनुभव करो। ठीक उसी तरह जैसे

बांसुरी अपने अन्दर की फूंक का अनुभव करती है। अपनी सचेत आत्मा के निर्माण की खुशी में, अपने अस्तित्व को बादशाहत के साथ मिल जाओ—तुम्हारा अस्तित्व है—स्वयं "तुम" तुम्हारा। "व्यक्तित्व"।

अपने में सफल व्यक्तित्व पैदा करो। जहां तुम में एक बार सफल व्यक्तित्व आ गया, तुम्हारे ऐसे हजारों दोस्त पैदा हो जायेंगे—जो तुम से सच्ची मोहब्बत करने लगेंगे। यदि तुम किसी स्त्री या पुरुष को अपनी तरफ आकर्षित करना चाहते हो, तो उसे अच्छी तरह अध्ययन करो और अपनी दिलचस्पी का एक अंग बना लो। इससे तुम्हारी चिन्ता धारायें, जीवन शैली और काम करने के तरीकों में परिवर्तन होंगे। ज्यादा नहीं, सिर्फ एक घण्टा हर रोज इस दिलचस्पी में सर्फ: करो—तुम में सिर्फ सफलता की झलक ही नहीं, पूरी सफलता दिखाई देगी।

यह सोचो कि हमारा स्वास्थ्य सुन्दर है। इस भावना से तुम में मस्ती भरती जायगी और तुम शीघ्र ही देखोगे, संसार के दुख रूपी कांटे तुम्हारी आंखों के सामने अंगूर के गुच्छों की तरह लटक रहे हैं। इससे तुम अपने अन्दर एक जीवित शक्तिका अनुभव करोगे और तुम्हारे जीवन की सारी समस्यायें अपने आप हल होती जायेंगी।

सफल व्यक्तित्व संसार-विजय का कीमती हथियार है। दुनिया की किसी भी ताकत से न डरो। भय मनुष्य का दुश्मन

है। पतन की ओर ले जाने वाली चिन्ताओं को मन से उखाड़ फेंको। ध्वंसकारी विचार ही तुम्हें कमजोर और मुर्दा बनाते हैं। इनसे न तो जीवन को नयी रोशनी मिलती है, न नसों में नया खून दौड़ता है।

यदि तुम्हें मालूम होने लगे कि तुम पतन की ओर ले जाने वाली चिन्ता-धाराओं पर कब्जा नहीं कर सकते और वे अनन्त रूपों से तुम्हारे दिमाग में हलचल मचाती हैं; तो अपने व्यवसाय में दिलचस्पी लो। लोगों से अपने सिद्धान्त और उद्देश्य के बारे में बातें करो। प्रकृति के अनन्त कानून चुपचाप तुम्हारी आशाओं को फलवती बनाने में मशगूल हो जायंगे। उस समय चाहे तुम रूखी रोटियाँ खाओ, वे भी मीठी मालूम होंगी।

सफल व्यक्तित्व के द्वारा तुम्हारे हाथ में बड़े से बड़े काम आ जायँगे।

घर धन धान्य से भर जायगा। दिमाग में नयी नयी स्कीमें सूझेंगी, यदि तुमने एक बार भी, दूसरों पर रोब जमाने वाला व्यक्तित्व हासिल कर लिया तो फिर तुम किसी काम में धोखा न खाओगे और हर तरफ तुम्हारी फतेह का बिगुल बजेगा।

बगैर सफल व्यक्तित्व की जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है? तुम्हारे गुण तुम्हें वह चुम्बक बनादेंगे कि जिस तरफ उसका मुंह ... आकर्षण शक्ति से उसी तरफ हर चीज

हर स्त्री-पुरुष में सफल व्यक्तित्व हासिल करने की एक सी ताकत है, मन को केन्द्रित करो। प्रेम आत्मा की सम्पत्ति है, यह अपने को ज्यादा बहादुरी-और सुरक्षा में ही प्रकट करता है। मैं तुम से और सब से कह रहा हूं, तुम्हारे अन्दर सफल व्यक्तित्व हासिल करने की बड़ी से बड़ी शक्तियां मौजूद हैं। वह तभी जागेंगी, जब तुम चञ्चलता और मोह से बच कर नवीन विकासों के लिये मन को प्रेम से शिक्षित करोगे।

पुरानी लकीरों के फकीर न बने रहो। कट्टर पंथियों से तर्क करना दिमाग में कांटे चुभोना है। नये तथ्यों की तरफ बढ़ो। सफल व्यक्तित्व की क्रियाओं से मनुष्य अपने लिये विजय की पक्की सड़कें तैयार करता है। उसके मार्ग से हजारों तरह के विघ्न दूर हो जाते हैं, और उसमें नित्य नयी शक्तियां पैदा होती हैं। ठीक उसी तरह जैसे सूनी जमीन में हरी और मुलायम घास पैदा होती है।

बहुत से बेवकूफ कहते हैं—मैं फलां काम करने गया लेकिन वह पूरा न हुआ। मैं फलां चीज चाहता हूं, किन्तु वह मुझे नहीं मिलती। इस तरह के आदमी निःसन्देह मुर्दा हैं। वह न तो मनुष्य-साइन्स पढ़ कर आगे बढ़ना जानते हैं, न उन्हें अपनी शक्तियों पर विश्वास है। यदि ये आदमी अपने अन्दरूनी "पावर हाउस" को चलाना सीख जायं—तो उनमें बिजली जैसी ताकत पैदा हो। उनकी दुनिया किसी उम्र में किसी बात के

अजीब विद्युत प्रवाह दौड़ उठेगा। यह ख्याली पुलाव नहीं, सफलता की सुनहरी कुञ्जी है। नीचे दी गयी शिक्षा से सीखो जिस आदमी से कोई काम निकाल कर उस पर पूरी तरह से रोब जमाना है, उससे कैसे हाथ मिलाया जाता है—तुम जिस व्यक्ति को प्रभावित करना चाहते हो—मजबूती के साथ उससे हाथ मिलाओ, उसकी आंखों की तरफ एकाग्र मन से देखो—और सिर्फ एक मर्तबा हाथ ऊपर से नीचे ले जाओ। इस समय मन में उस बात की चिन्तना करते रहो, जो उससे पूरी करना चाहते हो और फौरन उसका हाथ छोड़ दो। वह मनुष्य अवश्य तुम्हारे रोब में आ जायगा। इस विधान का प्रयोग अपने किसी दोस्त पर करो और पूछो, उसे कैसा मालूम होता है। वह तुम्हें बतायेगा—जैसे कोई शक्ति उस के शरीर के अन्दर घूम रही है।

अब कण्ठ-स्वर की बात आती है:—

संसार में लाखों व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें बोलनेका तरीका नहीं मालूम। उन्हें इस बात का पता तक नहीं, कि अपने में आकर्षण लाने के लिये हम कैसी जवान बोलें। वह बोलते इस तरह हैं, जैसे लाठी मार रहे हों। उनकी बोली में सांप बिच्छू जैसे जहरीले जानवरों की सृष्टि होती है जो दूसरों को काट खाती है या डंक मार देते हैं। इस तरह के आदमी अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारते हैं और मनुष्य जीवन को सर्वनाश की भट्ठी में हैं।

को अनुभव करने और तुम में पवित्र भावों को भरने की सब से बड़ी ताकत सिद्ध होगी।

मनुष्य-विज्ञान परीक्षाओं द्वारा यह साबित हो चुका है, विचार और अनुभव हमारे मांसके अन्दर अमृत या हलाहलकी सृष्टि करते हैं। क्रोधके आवेशमें आधे घण्टेके बाद पसीना और साँसका आविष्कार करने पर इस के अन्दर जहरीले पदार्थ पाये गये हैं। इसी तरह इसके विरुद्ध आनन्द प्रकाश के आध घण्टे बाद खून की खोज करने पर उसमें स्वास्थ्य को सुन्दर बनानेवाले पदार्थ मिलते हैं।

हृदय के भावोंमें सञ्जीवनी शक्ति है—उनमें आनन्दय सङ्गीत जैसे आत्मा को प्राण देनेवाले भावों को जगाते है, वैसे ही प्रेम की तरंगे स्वास्थ्य और सुख की कुञ्जियाँ बन जाती हैं—जिनके द्वारा महान व्यक्तित्व प्राप्त होता है और स्त्री-पुरुष हरकाममें सफल होते हैं।

जैसे काले मेघों से निकल कर सूर्य पृथ्वी के वायुमण्डल को अन्धकार से मुक्त कर संसार को उद्भासित कर देता है—वैसे ही प्रेम और संगीतसे मनुष्य के मांस में एक विचित्र थर्राहट पैदा होती है, जो शरीरमें नयी ताकतें भरती है और दिमाग में नये और तेजस्वी भाव। इससे शरीर में किसी तरह का रोग नहीं रह जाता, आत्मा अनन्त से बातें करती है और परमात्मा के साथ उसका परिचय हो जाता है।

समय के बदलते हुए फैशनों और सांसारिक दम्भों से अपनी आंखें बन्द कर लो और आत्मा की सुरीली तानों के सहारे प्रेम की दिव्य पूजा में अपने को तल्लीन कर दो— इस समय तुम्हें ऐसा बोध होगा, मानो तुम उस संसार में पहुंच गये हो, जो अत्यन्त पवित्र, और शान्तिमय है। उस समय तुम में नयी जवानी फिर आयेगी और तुम्हारी जिन्दगी आनन्द ज्योति से चमक उठेगी।

जो मनुष्य सच्चे प्रेमी नहीं, वे दया के पात्र हैं। उनकी निगाहों में यह शस्य श्यामला भूमि रेगिस्तान जैसी है। इस तरह के मनुष्यों की अवस्था असहायों से बढ़ कर घृणित है। ये पृथ्वी में हर किसी को अविश्वास, और सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। ये न तो दूसरों से प्रेम करना जानते हैं, न स्वयं अपने को प्यार कर सकते हैं। क्या 'प्रेम' के लिये मनुष्य जीवन की यह सब से बड़ी मुसीबत नहीं है?

प्रेम,—सफलता की साइंस है—यह शिक्षा हर स्त्री-पुरुष को दो। हजारों, लाखों, करोड़ों मनुष्यों को दो। समाज को दो, देश को दो,—जिससे संसार को नयी जिन्दगी मिले और तुम्हारे बीस करोड़ों महामनुष्य पैदा हों!

---

स्त्री-जीवन की ऊँची इच्छाओं का जिस समाज ने आदर किया है, वह समाज उन्नति में आगे बढ़ा है। स्त्री का समाज से गहरा सम्बन्ध है। गृहस्थ-जीवन में यदि स्त्री न हो तो सुख चैन की आशायें न रहें। स्त्री हीन परिवारों के आदर्श नष्ट हो जाते हैं। स्त्री पुरुष के सम्मिलन से परिवार की रचना होती है और अनेक परिवारों से समाज बनता है। परिवार वृक्ष की जड़ स्त्री है। जिस तरह जड़ पदार्थों में छोटे छोटे परमाणुओं की आकर्षण शक्ति अपने प्रभाव से काम करती रहती है, उसी तरह परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की शक्ति परिवार का सञ्चालन करती है। सम्मिलित शक्ति में आधीनता, स्वाधीनता, आत्मत्याग और आत्मरक्षा के भाव सदैव जागते रहते हैं। परिवार में सम्मिलित शक्ति के भावों की पूर्ति के लिये स्त्री-पुरुष के मिलन और परस्पर सहयोग की आवश्यकता है। बिना इन भावनाओं के सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं होती।

यदि आप दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाना चाहते हैं, तो आपका कर्त्तव्य है—पत्नी में समाकर पत्नी को देखें,—उसे उसी मिजाज और उदारता से देखें, जिससे अपनी कठिनाइयों का विचार करते हुए अपने व्यवहार में उसे पनपने का मौका दें। स्त्री को वाणी से नहीं, हृदय से स्पर्श करें। उसे अपराधी समझ कर उस पर जज बनने का लोभ त्याग दें और यह साफ हो जाने दें, हम सिर्फ अपने ही सुख के लिये भी क्या चाहते हैं ?

स्त्री को दबाना भूल है, उभड़ने देना चाहिये। पुरुष का काम इस उभड़ने में स्त्री की सहायता करना है। इस तरह स्त्री का हित पुरुष की भलाई का विरोधी नहीं होगा।

विवाह के बाद जब लड़की माँ बाप को छोड़ कर ससुराल जाती है, उसी दिन से उसकी जिन्दगी बदल जाती है। अब वह लड़कपन और अल्हड़पन को खोकर अपने आपको एक जिम्मेदार युवती समझने लगती है। अभी तक उसे किसी तरह की जिम्मेदारी का सामना नहीं करना पड़ता था, अब वह स्वयं जिम्मेदार स्त्री हो चुकी है। चञ्चलता गयी, उसकी जगह गम्भीरता ने ले ली। इस तरह क्रमशः पति पत्नी जीवन के बिखरे तारोंको एक गांठमें बांध कर जब साथ साथ रहने की प्रतिज्ञा कर लेते हैं, तब दो दिलों के जीवन-सङ्गीत एक साथ प्रवाहित होनेका मौका पाते हैं। स्त्री के लिये पति का, घर का और कुटुम्ब का बिगड़ना स्वयं उसके बिगड़नेके समान है। घर और पतिकी उन्नति में ही स्त्री की उन्नति है।

अक्सर देखा गया है, स्त्री पति से घर में बोलने भी नहीं पाती। इस गलतीका यह नतीजा होता है, वे एक दूसरे के विचारों से परिचित नहीं हो पाते और एक दूसरे से शरमाते रहते हैं। वे केवल उसी समय मिल पाते हैं, जब उन्हें काम-वासना पूरी करनी होती है। कैसी भयङ्कर समस्या है ? दाम्पत्य जीवन में रुकावटें डालने वाले इस तरह के मां बाप वास्तव